राजनीति में महिलायें (विश्लेषणात्मक अध्ययन)

*डॉ. शालिनी

Abstract

राजनीति में महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डालने से पूर्व भारतीय समाज में नारी की प्रस्थिति पर विचार करना समीचीन होगा। भारतीय नारी सदियों से सामाजिक रीति रिवाजों के दायरे में बंधी सिमटी रही है। घर की चहार दीवारी में ही सीमित रह कर उसने परिवार के कर्तव्यों का पालन किया है। 21वीं शती के दूसरे दशक में नारी अपने अस्तित्व के प्रति पूर्णतः जागरूक हो चुकी है। बलात्कार और कन्या भ्रूण हत्या के विरूद्ध सड़कों पर आंदोलन और धरनों से यह तथ्य उजागर होता है। आज स्त्री पुरूष की दया की मोहताज नहीं है। किन्तु इस स्थिति तक पहुंचने में उसे जिस घुटन भरी जिंदगी को जीना पड़ा है, वह लोमहर्षक है।

सामाजिक विचारकों का मत है कि भारतीय नारी का जीवन विरोधाभासी मान्यताओं का संगम है, कहीं वह शक्ति का प्रतीक है, कहीं उसे अबला माना जाता है। एक ओर वह प्रेयसी और प्रेरणादायी है, दूसरी ओर उसे पुरूष की अनुचरी कहा जाता है। यद्यपि भारतीय समाज में अतीत से वर्तमान तक ऐसी नारियों की एक लम्बी परम्परा है, जिन्होंने समाज में अपने क्रिया कलापों से नर की तुलना में नारी की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। सीता, सावित्री, राधा, दमयंती, पार्वती, अनुसूया, गार्गी, तारा, उर्मिला, रजिया बेगम, पद्यमिनी, मीरा, लक्ष्मीबाई, कस्तूरबा, सरोजनी एवं इन्द्रा गांधी, कुछ ऐसी अतीत और वर्तमान में भारतीय नारियां है।

इतिहास के विभिन्न कालों में नारी की सामाजिक प्रस्थिति इस प्रकार रही हैः–

वैदिक कालः– इस काल में 'यत्र नायस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' कह मनु ने नारी जाति के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किए है। इस काल में नारी ने अपनी प्रतिभा से समाज का गौरव बढाया है। इस काल में नारी पुरूष की सखा और परामर्शदात्री के रूप में रही है। रामायण की सीता और महाभारत की द्रोपदी इसका उदाहरण है। अतीतकाल में ही शनैः शनैः नारी की स्थिति क्षीण होती गई। बौद्ध और जैन युग में नारी के प्रति विरक्ति की भावना रही, किन्तु आगे चलकर इन धर्मो में भी नारियों ने साधना में सफलता प्राप्त की, नारी के लिए शिक्षा और दीक्षा के द्वार खुले रहे। इसी काल में आगे चलकर नारी विलासिनी और नगरवधू के रूप में भी जानी गई। धीरे–धीरे नारी का इतिहास पीड़ा, प्रताड़ना और अपहरण से आपूरित हो गया।

मध्यकालः इस काल में समाज में इस्लाम संस्कृति का प्रभाव परिलक्षित होने लगा। नारी के गौरव को ठेस पहुंची। इस युग में नारी घर की कारा में ऐसी बंद हुई कि आज तक पूर्णरूपेण उससे मुक्त नहीं हो पाई। नारी के लिए शिक्षा के द्वार बंद हो गए तथा उसे पर्दाप्रथा और घूंघट अपनाने पर विवश होना पडा। बाल विवाह की प्रथा प्रचलित हो गई, स्वाधीनता छिन गई। भक्ति आंदोलन ने यद्यपि नारी स्थिति में थोड़ा परिवर्तन किया।

आधुनिककालः यह काल ब्रिटिश शासकों के आगमन के साथ प्रारम्भ होता है। इस काल में वैसे तो नारी की दशा कोई अच्छी नहीं थी, किन्तु पश्चिम की सभ्यता और संस्कृति के सम्पर्क से नारी जीवन के विविध क्षेत्रों में सहभागिता निभाने लगी। जो भारतीय विदेश गये उन्होने वहां से लौटकर नारी उत्थान के लिए महतवपूर्ण कार्य किए। इस समय अनेक सामाजिक सुधारकों ने नारी कल्याण के कार्य किए। दयानंद द्वारा स्थापित आर्य समाज की इसमें महती भूमिका रही। दयानंद ने नारी को पुरूष के समान स्थापित किया। उनका सत्यार्थप्रकाश अमर रचना है जिसमें नारी शिक्षा का शंखनाद किया गया है। बंगाल में राजा मनोहर राय ने सती प्रथा के विरूद्ध संघर्ष किया। इसी काल में शारदा एक्ट लागू किया गया, जिससे बाल विवाह समाप्त करने में सहयोग मिला। 1926 में दिल्ली में लेडी हॉर्डिंग कॉलेज की स्थापना से नारियों को डॉक्टर, नर्स, प्रोफेसर बनने के अवसर मिले। देश की अनेक प्रगतिशील संस्थाओं ने नारियों की उच्च शिक्षा की व्यवस्था की। महात्मा गांधी ने कांग्रेस के भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में नारियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया तथा इस आंदोलन में स्त्रियों ने पुरूषों के साथ बड़चढ़कर भाग लिया। कस्तूरबा सरोजिनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित आदि ने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्त्रियों को पुरूषों के समान अधिकार स्वतः मिल गए। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक क्षेत्रों में नारी द्रुत गति से अग्रसर हो रही है, शिक्षा के क्षेत्र में महिलायें आज पुरूष से बाजी मार रही है, बोर्ड और विश्वविद्यालयों के परीक्षा परिणाम इस बात के साक्षी हैं। नारियां आज नृत्य, गायन, सिलाई–कढाई के अतिरिक्त राजनीति और राष्ट्र रक्षा में भी योगदान दे रही है। प्रशासनिक सेवाओं में भी वे निरन्तर अग्रसर है। नारी आज समाज के रथ का आवश्यक पहिया है, उसकी उन्नति में ही स्थान और देश की उन्नति है। भारतीय संविधान में हिन्दू कोड बिल ने नारी को बंधन से मुक्त कर पैतृक सम्पत्ति की अधिकारिणी बनाया है।

नारी उत्थान के जहां अनेक कार्य हुए है वहॉ यह सत्य है कि बहुत कुछ होना बाकी है। जनसंख्या के आंकडे बताते है कि देश की 80 प्रतिशत नारियां अभी अशिक्षित हैं। नारी–पुरूष औसत भी चिंताजनक है। वर्ष 1911 जनसंख्या के आंकडे बताते है कि 30 करोड़ 30 लाख 55 हजार 987 पुरूषों पर 26 करोड़ 38 लाख 29 हजार 958 स्त्रियां है। यदि इस आंकड़े को घटा कर देखा जाये तो 1 हजार पुरूषों पर 932 स्त्रियां है। समस्त देश में केवल केरल और दादर–नागर हवेली ही ऐसे क्षेत्र हैं जहां स्त्रियां की कुछ अधिक हैं। इसका मुख्य कारण भारतीय समाज में पुत्री से अधिक पुत्र मोह है। हमारी यहां आज भी नई दुल्हन को 'पुत्रवती भवः' का आशीर्वाद दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला आंदोलन, महिला–दिवस आदि कार्यक्रमों के माध्यम से महिला की स्थिति में सुधार के निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। आज समय की मांग और सामाजिक चेतना ने भी इस दिशा में समाज को जागरूक किया है।

राजनीति में महिलाओं की भूमिकाः

राजनीति सत्ता प्राप्ति की कला और उसे बनाये रखने का शिल्प है। राजनीति की अवधारणा सत्ता और शक्ति से जुडी हुई है। राजनीति के केन्द्र में सत्तासमीकरण का समावेश है। भारतीय राजनीति में 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में महिलाओं की सहभागिता नगण्य थी। इसका मुख्य कारण यह था कि हमारे सामाजिक जीवन में स्त्री और पुरूष की भूमिका के क्षेत्र बहुत स्पष्टता के साथ विभाजित थे, जिसके कारण स्त्रियां घर तक सीमित थीं। इसका एक कारण यह भी रहा कि भारत में पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से बहुत काल तक स्त्रियां अछूती रहीं। पाश्चात्य शिक्षा ने देश के बुद्धि जीवियों को जनतंत्र और समाजवाद जैसी अवधारणायें दीं, किन्तु इसका लाभ पुरूष वर्ग को ही मिला। इस दिशा में महिलायें उपेक्षित ही रही, उनका राजनीति से सम्बंध नहीं रहा। किन्तु महिला शिक्षा के प्रसार के

कारण परिस्थितियां करवट लेने लगी और शनैः शनैः महिलायें राजनीति में भाग लेने के लिए आगे आने लगी। आरम्भ में महिलाओं ने सीधी राजनीति में प्रवेश न कर अपने आपकों महिला शिक्षा, नारी कल्याण, विधवा विवाह, बाल विवाह और पर्दाप्रथा निषेध जैसे समर्पित विषयों से जोड़े रखा। वे नारी जाति के समस्याओं के लिए प्रथाओं रहीं। इस समय इनका मुख्य संघर्ष उन कुरीतियों और प्रथाओं से था जिसमें जकड़ी हुई नारी मुक्ति के लिए छटपटा रही थी।

इस प्रकार नारी जीवन की समस्याओं से जुड़ने के कारण स्वतः ही महिलायें स्वतंत्रता संग्राम और राजनीति की ओर उन्मुख हुई। इस प्रकार वे देश के आम चुनावों में भाग लेने को तत्पर हो गई। यद्यपि इस मार्ग में उनके सम्मुख अनेक कठिनाईयां थी, किन्तु पीछे मुड़ने का अवसर नहीं, वे निरन्तर आगे बढ़ती गई। भारतीय राजनीति की यह विशेषता रही कि भारत में महिलाओं को उनके राजनैतिक अधिकार पुरूषों के साथ ही मिल गये, उन्हें पृथक से राजनैतिक अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा। यद्यपि कहना उचित नहीं होगा कि भारत में महिलाओं को बिना हाथ पैर हिलाये ही सब कुछ मिल गया। वस्तुतः महिलायें जीवन संघर्ष में पूर्णतः जुटी हुई हैं, वे पुरूषों के साथ चुनाव मैदान में डटी हुई है और उन्होने न केवल मंत्री पद अपितु राष्ट्रपति, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री और राजदूत जैसे पदों को भी शोभा बढाई है। इसके अतिरिक्त वे राजनैतिक दलों की बडी पदाधिकारी रही हैं और अब वे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में पंच सरपंच और प्रधान के पद पर निरन्तर कार्य कर रहीं हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग छः दशकों बाद आज परिस्थितियां पूर्णतः परिवर्तित हो गई हैं तथा राजनीति का व्यवसायीकरण हो गया है। आज लोग राजनीति में केवल समाज सेवा के लिए नहीं अपितु व्यवसाय समझकर भी प्रविष्ट हो रहे है। इसलिये यदि आज नवयुवतियां भी यदि राजनीति को व्यवसाय समझकर उसमें प्रविष्ट हो तों हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। आज भारतीय समाज में महिलायें निरन्तर अपनी उल्लेखनीय और प्रभावशाली भूमिका का निर्वाह कर रही है। राजनीति में सक्रिय भूमिका का अभिप्राय राजनीति के क्रिया कलापों में परोक्ष एवं अपरोक्ष दोनों रूपों में भाग लेने से है। परोक्ष सहभागिता का विचार मतदान से सम्बन्धित है। विगत अनेक आम चुनावों से यह तथ्य प्रतिपादित हो चुका है कि चाहे ग्रामीण क्षेत्र हो अथवा शहरी, हर स्थान पर महिलाओं का प्रतिशत पुरूषों से कम नहीं है, कहीं कहीं तो उन्होने पुरूषों से भी अधिक मतदान किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो महिलायें मतदान दिवस को त्यौहार और पर्व की भांति मनाती है, वे ग्रुप में मतदान करने जाती है। अपरोक्ष से अभिप्राय महिलाओं का राजनैतिक महत्व के प्रश्नों से सीधे जुड़ना और राजनैतिक नेतृत्व की ओर अग्रसर होना है तथा चुनाव लड़ना है। यद्यपि महिलाओं की राजनीति में सक्रियता पुरूषों के बराबर है और कहीं–कहीं तो पुरूषों से भी अधिक है, किन्तु चुनाव लडने वाले उम्मीदवारों की दृष्टि से महिलाओं की संख्या पुरूषों से अत्यन्त नगण्य है। भारतीय लोकसभा के 1952 से 2014 के चुनावों में महिलाओं का अल्प स्थान अधोलिखित सारणी से स्पष्ट हो जायेगा।

सारिणी 1952 से 2014 तक लोक सभा में महिला सांसद

लोकसभा	महिला उम्मीदवार	जीति	जीत प्रतिशत	महिला सांसदों का प्रतिशत
पहली (1952)	43	22	51.16	4.50
दूसरी (1957)	45	22	48.89	4.45
तीसरी (1962)	66	31	46.97	6.28
चौथी (1967)	67	29	43.28	5.58

पांचवीं (1971)	61	28	45.90	5.41
छठी (1977)	70	19	27.14	3.50
सातवीं (1980)	143	28	19.58	5.29
आठवीं (1984)	162	43	26.54	7.95
नवीं (1989)	198	29	14.65	5.48
दसवीं (1991)	330	39	11.81	7.30
11वीं (1996)	599	40	6.68	7.37
12वीं (1998)	274	43	15.70	7.92
13वीं (1999)	284	49	17.25	9.02
14वीं (2004)	355	45	12.68	8.29
15वीं (2009)	556	59	10.61	10.87
16वीं (2014)	668	61	9.13	11.23

चुनाव में महिलाओं की भागीदारी

पार्टी	2004		2009		2014	
	उम्मीदवार	जीती	उम्मीदवार	जीती	उम्मीदवार	जीती
कांग्रेस	45	12	43	23	57	4
भाजपा	30	10	44	13	37	28
अन्य	280	23	469	23	574	29
कुल	355	45	556	59	668	61

संसद और विधानसभाओं में 33ः आरक्षण

कांग्रेस और भाजपा सहित देश के सभी राजनैतिक दल विगत अनेक वर्षो से विधानसभा और संसद में महिलाओं का 33 प्रतिशत आरक्षण की वकालत कर रहे है, किन्तु जब भी इस सम्बंध में विधेयक पारित करने का प्रश्न आता है वे किसी न किसी बहाने पीछे हट जाते हैं। संसद में महिला आरक्षण विधेयक पर वर्षो से गतिरोध भी बना हुआ है। यह विधेयक संविधान संशोधन के जरिये लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रावधान करता है। यद्यपि महिला आरक्षण के लिए 108वां संविधान संशोधन विधेयक

राजयसभा में 2010 में ही पारित हो चुका है, परन्तु लोकसभा में वह आज तक अटका हुआ है। हमारे देश में महिलायें 48 प्रतिशत हैं किन्तु विधानमण्डलों और लोकसभा में उनका प्रतिनिधित्व आबादी के अनुपात में बेहद कम है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि भारत की महिलायें जागरूक है, चेतन है और अपने राजनैतिक अधिकारों के लिए सक्रिय है, उन्हें याद रखना चाहिए उन्हें निरन्तर संघर्ष करना है और सफलता प्राप्त करनी है। 20वीं शताब्दी के आरम्भ में भारतीय तरूण तरूणियों को सम्बोधित करते हुए कठोप निषद् का जो मंत्र विवेकानंद ने कहा था वह भारत की महिलाओं का मार्गदर्शक हो सकता हैः–

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्यधारा निशिता दुरत्या
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

उठो जागो आगे बढ़ो, भविष्य तुम्हारा है। किन्तु स्वामी जी ने चेतावनी दी कि यह मार्ग कांटो से भरा हुआ है, यह छुरे की धार की तरह तीखा है। इस पर चलना अत्यन्त कठिन है, किन्तु आज महिलाओं के समक्ष संघर्ष के इस मार्ग को अपनाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है। साहस के साथ निरन्तर अपने सुनिश्चित पथ पर चलते जाना ही हमारी सफलता है। संघर्ष से ही महिलायें राजनीति में अपना स्थान ग्रहण कर सकती है।

***सहायक आचार्य**
राजकीय महाविद्यालय
चिमनपुरा, शाहपुरा, जयपुर (राज.)

आधार ग्रन्थ

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास रमेश चन्द्र मजूमदार
2. श्रीमद् बाल्मीकि रामायणः गीता प्रेस गोरखपुर
3. संक्षिप्त महाभारतः गीता प्रेस गोरखपुर
4. भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थितिः राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट
5. भारतीय समाजः डॉ. इन्द्र देव
6. सत्यार्थ प्रकाशः महर्षि दयानंद
7. Thoughts of Power - Swami Vivekananda
8. कठोपनिषद्ः गीता प्रेस गोरखपुर
9. Women And Social Change in India: Shalini Panda